कमिटमेंट
सपना सिंह

परिचय

नाम - सपना सिंह

जन्म तिथि - 21 जून 1969, गोरखपुर, उत्तर प्रदेश

शिक्षा - एम.ए. (इतिहास, हिन्दी), बी.एड.

प्रकाशित कृतियाँ - धर्मयुग, साप्ताहिक हिन्दुस्तान के किशोर कालमों से लेखन की शुरूआत, पहली कहानी 1993 के सिम्बर हंस में प्रकाशित ... लम्बे गैप के बाद पुनः लेखन की शुरूआत, अबतक -''हंस-कथादेश'', परिकथा, कथाक्रम सखी जागरण, समर लोक इत्यादि में दर्जन भर से अधिक कहानियाँ प्रकाशित।

कमिटमेंट

फूलों से सजा कमरा साइड टेबल पर खुशबू बिखेरती मोमबत्तियाँ उसका धड़कता दिल बार-बार दरवाजे की ओर उठती प्रतिक्षातुर नजरें ढेरों बैचनियाँ। कितना कम जानती है वह नील को। फिर भी ऐसा लगता है जैसे जन्मों का नाता है उनसे। जीवन मानों तैयारी थी यहाँ तक पहुंचने की।

कितना आनन-फानन में हुआ सबकुछ ! नील के पापा मम्मी और छोटी बहन आये थे उसे देखने। वह तुरन्त ही कॉलेज से आयी थी कपड़े भी बदलने का वक्त नही मिला मम्मी ऐसे ही उसे उन लोगों के सामने लेकर आ गई। उस समय उसे गुमान भी नही था कि ये लोग रिश्ते की बात करने आये है। बाद में मम्मी ने पूछा था उसे नील कैसा लगा? वह क्या बताती....? उसने उसे उस तरह से देखा ही कहाँ था .....? और नील भी कहाँ उसे देख रहें थे। सिर्फ एक बार ऊपर से नीचे तक निहारा था उसे.....और फिर पापा के साथ बातों में व्यस्त हो गये थे। अब मम्मी के कहने पर जब इस तरह सोचा तो नील ठीक ही लगे। ऊँचा पूरा व्यक्तित्व अच्छी नौकरी और छोटा सा परिवार! एक मध्यमवर्गीय लडकी इससे अधिक और क्या .....चाह सकती हैं। ना करने की कोई वजह नही थी। उसे पता था पापा रिटायर होने से पहले उसकी जिम्मेदारी से मुक्त होना चाहतें थे। दोनो दीदी और भैया .....अपने अपने परिवारों में रचे बसे है .....सिर्फ वही तो बची है .....उसके हाथ पीले कर पापा चैन की सांस लेना चाहते है .....!

उसने हाँ कर दी .....और पन्द्रह दिन के अन्दर ही सगाई कर दी गई .....। विवाह की तारीख छै महीने बाद की थी। उसकी होने वाली ननद ने उसका मोबाइल नम्बर माँगा था .....उसने दे दिया था.....! अक्सर वह फोन पर बातें करती, उसकी पसन्द ना पसन्द पूछती कभी-कभार अपने भइया के बारे मे भी बताती। जूही को नील के फोन की प्रतीक्षा रहती.....उसने अपनी सहेलियों के होने वाले पतियों को देखा था .....सगाई के बाद से बेचारियों के फोन हमेशा एंगेज ही मिलते .....जब देखो मंगेतर से फुसफुसाहटों में बातें चल रही है कानो पर मोबाइल चिपका रहता और गाल शर्म से लाल हुूए रहते पर वह तो समान्य हाय हैलो को भी तरस गई